कल्याण भारती

वनवासी सेवा,
संगठन और संस्कृति
संरक्षण हेतु समर्पित

नये वर्ष का नव -संदेश,
जग जननी हो भारत देश।
भारत-माता की जय-जय का,
वन-उपवन फैले उन्मेष।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष 29, अंक 1

जनवरी-मार्च 2018 (विक्रम संवत् 2075)

सम्पादक

स्नेहलता बैद

–सम्पादन सहयोग–

तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :

161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग

2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7

दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :

29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट

(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)

कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :

13/14, डबसन लेन, 4 तल्ला,

गुलमोहर पार्क के पास

हावड़ा - 1, दूरभाष-2666–2425

–प्रकाशक–

विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, on behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata-700 007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata-700 005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- संपादकीय... 2
- भोपाल में सम्पन्न हुई... 3
- वनवासी कल्याण आश्रम के बढ़ते चरण... 4
- हर्षोल्लास से मनी श्रीरामनवमी... 6
- मेघालय के वनवासी क्रांतिवीर... 7
- सुन्दरवन यात्रा के प्रेरक संस्मरण 8
- धूमधाम से मना कोलकाता-हावड़ा 9
- जनजागरण का प्रेरक अभियान... 10
- कल्याण आश्रम की नई कार्यकारिणी.... 11
- सभ्य कौन?... 12
- सुश्री तापसी मैत्र का दु:खद निधन... 13
- नव संवत्सर... 14
- अनुकरणीय.... 15
- बोधकथा... 16
- कविता ... 13
- हमारी संस्कृति हमारा स्वास्थ्य... 14
- अनुकरणीय... 15
- बोधकथा... संघर्ष से निखरता है जीवन... 16
- कविता ... विक्रम सम्वत् धन्य हमारा... 16

संपादकीय...

पूर्वोत्तर के भावनात्मक एकीकरण का संकल्प हुआ साकार

देश के पूर्वोत्तर राज्यों -त्रिपुरा, नागालैंड और मेघालय में भाजपा और उसके गठबंधन को ऐतिहासिक सफलता मिली है। कोई माने या नहीं माने भाजपा की विजय और माकपा नेतृत्व वाले वाम दलों की पराजय बहुत बड़ी राजनीतिक घटना है। इस जीत के पीछे संघ के स्वयंसेवकों का बहुत बड़ा त्याग व बलिदान है। भाजपा की प्रचंड जीत पर संघ के उन चार प्रचारकों का बार-बार स्मरण हो रहा है, जिनके शव भी आज तक हमें नहीं मिल सके। विश्व भर में फैले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के करोड़ों स्वयंसेवकों के लिए 28 जुलाई, 2001 एक काला दिन सिद्ध हुआ। इस दिन भारत सरकार ने संघ के उन चार वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की मृत्यु की विधिवत् घोषणा कर दी, जिनका अपहरण छह अगस्त, 1999 को त्रिपुरा राज्य में कंचनपुर स्थित 'वनवासी कल्याण आश्रम' के एक छात्रावास से चर्च प्रेरित आतंकियों ने किया था। इनमें सबसे वरिष्ठ थे 68 वर्षीय **श्री श्यामलकांति सेनगुप्ता।** उनका जन्म ग्राम सुपातला (तहसील करीमगंज, जिला श्रीहट्ट, वर्तमान बांग्लादेश) में हुआ था। श्री सुशीलचंद्र सेनगुप्ता के पांच पुत्रों में श्री श्यामलकांति सबसे बड़े थे। विभाजन के बाद उनका परिवार असम के सिलचर में आकर बस गया। मैट्रिक की पढ़ाई करते समय सिलचर में प्रचारक श्री वसंतराव, एक अन्य कार्यकर्ता श्री कवीन्द्र पुरकायस्थ तथा उत्तर पूर्व विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक श्री उमारंजन चक्रवर्ती के संपर्क से वे स्वयंसेवक बने। मैट्रिक करते हुए ही उनके पिताजी का देहांत हो गया। घर की जिम्मेदारी कंधे पर आ जाने से उन्होंने नौकरी करते हुए एम.कॉम. तक की शिक्षा पूर्ण की। इसके बाद उन्होंने डिब्रूगढ़ तथा शिवसागर में जीवन बीमा निगम में नौकरी की। 1965 में वे कोलकाता आ गये। 1968 में उन्होंने गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया। इससे उन्हें तीन पुत्र एवं एक कन्या की प्राप्ति हुई। नौकरी के साथ वे संघ कार्य में भी सक्रिय रहे। 1992 में नौकरी से अवकाश लेकर वे पूरा समय संघ कार्य में लगाने लगे। वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने उनकी योग्यता तथा अनुभव देखकर उन्हें क्षेत्र कार्यवाह का दायित्व दिया। दूसरे कार्यकर्ता श्री **दीनेन्द्र डे** का जन्म 1953 में उलटाडांगा में हुआ था। उनके पिता श्री देवेन्द्रनाथ डे डाक विभाग में कर्मचारी थे। आगे चलकर यह परिवार सोनारपुर में बस गया। 1963 में यहां की 'बैकुंठ शाखा' में वे स्वयंसेवक बने। यहां से ही उन्होंने 1971 में उच्च माध्यमिक उत्तीर्ण किया। 'डायमंड हार्बर फकीरचंद कॉलिज' से गणित (ऑनर्स) में पढ़ते समय उनकी संघ से निकटता बढ़ी और वे विद्यार्थी विस्तारक बन गये। क्रमश: उन्होंने संघ का तृतीय वर्ष का प्रशिक्षण लिया। प्रचारक के रूप में वे ब्रह्मपुर नगर प्रचारक, मुर्शिदाबाद सह जिला प्रचारक, कूचबिहार, बांकुड़ा तथा मेदिनीपुर में जिला प्रचारक रहे। इसके बाद वे विभाग प्रचारक, प्रांतीय शारीरिक प्रमुख रहते हुए वनवासियों के बीच सेवा कार्यों में भी संलग्न रहे। 51 वर्षीय **श्री सुधामय दत्त** मेदिनीपुर शाखा के स्वयंसेवक थे। स्नातक शिक्षा पाकर वे प्रचारक बने। पहले वे हुगली जिले में चूंचड़ा नगर प्रचारक और फिर मालदा के जिला प्रचारक बनाये गये। कुछ समय तक उन पर बंगाल के सेवाकार्यों की भी जिम्मेदारी रही। इसके बाद पत्रकारिता में उनकी रुचि देखकर उन्हें कोलकाता से प्रकाशित हो रहे साप्ताहिक पत्र 'स्वस्तिका' का प्रबन्धक बनाया गया। अपहरण के समय वे अगरतला में विभाग प्रचारक थे।

बंगाल में 24 परगना जिले के स्वयंसेवक, 38 वर्षीय **श्री शुभंकर चक्रवर्ती** इनमें सबसे युवा कार्यकर्ता थे। एल.एल.

बी. की परीक्षा देकर वे प्रचारक बने। वर्धमान जिले के कालना तथा कारोयात में काम करने के बाद उन्हें त्रिपुरा भेजा गया। इन दिनों वे त्रिपुरा में धर्मनगर जिले के प्रचारक थे। इन सबकी मृत्यु की सूचना स्वयंसेवकों के लिए तो हृदय विदारक थी ही,पर उनके परिजनों का कष्ट तो इससे कहीं अधिक था जो आज तक भी समाप्त नहीं हुआ। चूंकि इन चारों की मृत देह नहीं मिली, अत: उनका विधिवत् अंतिम संस्कार तथा मृत्यु के बाद की क्रियाएं भी नहीं हो सकीं।

इस अभूतपूर्व विजय का श्रेय असंख्य हुतात्मामों एवं ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ताओं के प्रचंड अध्यवसाय को है। जिन्होंने पूर्वोत्तर भारत की संवेदनशील समस्याओं को गहराई से महसूस किया और जनजातीय समाज की आवाज सुनी। उनके मूलभूत आस्थाओं के दृढ़ीकरण के साथ वनवासी में जो नई चेतना आई है वह कार्यकर्ताओं के संगठन की कुशलता और समर्पण का जीवंत साक्ष्य है। अग्निगर्भ अवस्था में पड़ा हुआ पूर्वांचल आज शांत-स्वस्थ एवं स्थिरता के साथ भारत की मुख्यधारा में समाहित होकर बह रहा है, इससे बड़ा संतोष और भला क्या हो सकता है? यही संतोष पूर्वोत्तर क्षेत्र के उज्ज्वल भविष्य का संबल है और यही उसका आधारा भी। पूर्वोत्तर की पहचान को भारत की पहचान का अभिन्न अंग बनाए रखने में मददगार बने रहना ही सब कार्यकर्ताओं की मुख्य भूमिका है।

यह विजय हम सबमें दुगुने उत्साह के साथ कार्यरत होने की प्रेरणा जगाये, और सर्व समावेशी संस्कृति की कल्पना का पुरोधा बने आज का यह पूर्वोत्तर क्षेत्र इसी भाव के साथ आप सभी को हिन्दू नववर्ष विक्रम संवत् 2075 एवं श्रीरामनवमी की अशेष शुभकामनाएं। इति शुभम्। ❑

– स्नेहलता बैद

भोपाल में सम्पन्न हुई 20वीं राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता

28-30 दिसम्बर 2017 को मध्यप्रदेश भोपाल में अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम की 20वीं राष्ट्रीय प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। इस बार तीरंदाजी के साथ खो-खो (सब-जूनियर) की प्रतियोगिता भी आयोजित थी। पूर्व तैयारी के रूप में राज्यों में भी तीरंदाजी और खो-खो की प्रतियोगिता सम्पन्न हुई थी। साथ-साथ कई स्थानों पर प्रशिक्षण का भी आयोजन किया था। ततपश्चात राज्य स्तर पर चयन प्रक्रिया हुई और वनवासी खिलाड़ियों को राष्ट्रीय स्तर पर खेलने का अवसर मिला। तीरंदाजी के 317 और खो-खो के 223 खिलाड़ी भोपाल पधारे थे। स्टेशन पर स्वागत करने से लेकर भोपाल के कार्यकर्ताओं ने सभी प्रकार की व्यवस्था बड़े ही सुन्दर एवं सुचारु रूप से सम्पन्न की। दिल्ली से प्रतियोगिता देखने गए एक दर्शक का कहना था कि भोपाल में आयोजित प्रतियोगिता देखकर हम बड़े ही प्रभावित हैं।

वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय खेलकूद प्रमुख एवं केन्द्रीय टोली का नेतृत्व सही में सराहनीय रहा। प्रतियोगिता का उद्घाटन मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किया और सभी खिलाड़ियों का स्वागत करते हुए शुभकामनाएं दी। मध्यप्रदेश की खेल मंत्री श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया ने भी विशेष रूप में उपस्थित रहते हुए कहा कि जबलपुर में प्रारंभ की गई तीरंदाजी अकादमी में राज्य सरकार तीरंदाजी को बढ़ावा देगी। 317 तीरंदाजों ने यहाँ प्रतियोगिता में सहभागी होकर विश्व रिकॉर्ड बनाया। खेल प्रतियोगिता परिसर में एक उत्कृष्ट प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया और रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गये थे। तीरंदाजी में राजस्थान के विजेश बामनिया को दो स्वर्ण पदक मिले और मॉडर्न खो-खो के फाइनल में देवगिरी प्रांत विजेता बना। ❑

वनवासी कल्याण आश्रम के बढ़ते चरण

– अतुल जोग, अ.भा.संगठन मंत्री

वनवासी कल्याण आश्रम एक संगठन है, विचार है, आंदोलन है। जनजाति समाज की अस्मिता और अस्तित्व हेतु कार्यरत इस संगठन के कार्यकर्ताओं के सामने एक लक्ष्य है- शिक्षा, आरोग्य, स्वावलम्बन श्रद्धाजागरण, हितरक्षा जैसे प्रकल्पों का संचालन करते हुए अपने वनवासी समाज का सर्वांगीण विकास करना। इस हेतु 14 हज़ार से अधिक स्थानों पर 20 हज़ार से अधिक प्रकल्प चल रहे हैं। पिछले 65 वर्षों से चल रहे इस कार्य के चलते समाज में कल्याण आश्रम के कार्य के प्रति विश्वास बढ़ा है।

हमारी उपलब्धियाँ

सामुदायिक वनाधिकार

वनाधिकार कानून 2006 की चर्चा में जहाँ सर्वत्र व्यक्तिगत जमीन हेतु मांग सुनाई देती है, वहाँ जनजाति समाज के बीच कल्याण आश्रम के सामुदायिक वन भूमि (CFR) के लिये प्रयासों की पहल से परिवर्तन की एक लहर चल पड़ी है। महाराष्ट्र के साकरी तहसील के जिला धुले के कालदरा गांव में 15 जुलाई 2017 को जिला अधिकारी द्वारा 10 गांवों को सामुदायिक वनाधिकार प्रदान किए गए। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले के घोंघा एवं ढोल बज्जा पंचायतों के दस गांवों को 5 हज़ार हेक्टेयर वनक्षेत्र का सामुदायिक वनाधिकार माननीय मुख्यमंत्री द्वारा दिया गया और जशपुर नगर में प्रशासन ने 10 गाँवों को जमीन के पट्टे देने का निर्णय किया।

छत्तीसगढ़ वनवासी विकास परिषद का सम्मान

मध्यप्रदेश शासन द्वारा वनवासी विकास समिति छत्तीसगढ़ संस्था को गणतंत्र दिवस के अवसर पर जनजाति समाज के सर्वांगीण विकास के कार्य हेतु *महात्मा गांधी राष्ट्रीय सम्मान* से पुरस्कृत किया गया।

20वीं राष्ट्रीय वनवासी खेल प्रतियोगिता

28 से 31 दिसम्बर को भोपाल में आयोजित 20वीं राष्ट्रीय वनवासी खेल प्रतियोगिता में 316 तीरंदाजों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में से 30 तीरंदाजों को भारतीय खेल प्राधिकरण के प्रशिक्षण केन्द्र के प्रवेश हेतु चयनित किया गया।

जशपुर में 51 हजार रुग्णों की चिकित्सा

जशपुर के **धर्मार्थ चिकित्सालय** के माध्यम से आरोग्य सेवा के सन्दर्भ में कल्याण आश्रम का कार्य शुरू हुआ। एक वर्ष पूर्व इस चिकित्सालय में ऑपरेशन थियेटर शुरू हुआ। विभिन्न डाक्टरों के एवं कार्यकर्ताओं के प्रयासों से एक वर्ष में 72 रोगियों के ऑपरेशन के साथ 51 हजार रुग्णों की चिकित्सा की गई।

सुकरी बोम्मागौड़ा का सम्मान

कर्नाटक की सुकरी बोम्मागौड़ा को पारंपारिक लोक गीतों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु 2017 में पद्मश्री सम्मान प्रदान किया था। वनवासी कल्याण कर्नाटक की बेंगलुरू नगरीय समिति द्वारा 2 जुलाई 17 को पद्मश्री सुकरी बोम्मागौड़ा के सम्मान के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 600 लोग उपस्थित रहे।

श्रीमती अच्चम्मा का सम्मान

10 जुलाई को आंध्र प्रदेश में विगत तीन दशकों से कल्याण आश्रम में कार्यरत पूर्णकालीन कार्यकर्ता श्रीमती अच्चम्मा को प.पू. सरसंघचालक मा. मोहनराव भागवत द्वारा दिल्ली में मातृशक्ति प्रतिभा सम्मान से सम्मानित किया गया। हमें इस बात का गर्व है कि श्रीमती अच्चम्मा ने सम्मान की राशि 51,000/- कल्याण आश्रम के कार्य हेतु दान कर दी।

उदयपुर में विचार गोष्ठी

27 जनवरी को जनजाति समाज का गौरवपूर्ण इतिहास एवं परम्पराएँ विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें जनजाति समाज के युवा एवं व्यवसायी बंधु-भगिनी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

भूमि अधिग्रहण के विषय पर सेमिनार

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम तथा गाँधी स्मृति

एवं दर्शन समिति-दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 9-10 सितम्बर 2017 को भूमि अधिग्रहण पुनर्वास तथा पुनर्व्यवस्थापन में पारदर्शिता के विषय को लेकर दिल्ली में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

गुही छात्रावास के भवन का लोकार्पण

20 जनवरी 2017 को माननीय सरकार्यवाह श्री भैयाजी जोशी के करकमलों से एवं श्री सोमयाजुलु की उपस्थिति में गुही छात्रावास के भवन का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विराट जनजाति सम्मेलन का आयोजन भी किया गया था।

जिला सम्मेलन

वनवासी कल्याण आश्रम की योजनानुसार इस वर्ष देश में जिला स्तर पर जनजाति सम्मेलनों का आयोजन किया गया। देश में बड़े उत्साह से 307 जनजाति जिला सम्मेलनों का आयोजन हुआ। झारखण्ड में विभिन्न जिलों में एक लाख से अधिक जनजाति महिला-पुरुष एकत्रित हुए और बस्तर जैसे समस्याग्रस्त जिले के सम्मेलन की शोभायात्रा समाज के उत्साह का परिचय दे रही थी।

झारखण्ड के खूँटी नगर में आयोजित जिला सम्मेलन में कश्मीर में आतंकवादियों से संघर्ष करते समय शहीद हुए वनवासी **जावरा मुण्डा** की पत्नी का मंच पर सम्मान हुआ और ग्रामवासियों ने उस शहीद की स्मृति में स्मारक बनाने का संकल्प लिया।

- सम्मेलनों में विशाल शोभायात्रा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा जनजातियों की समस्याओं के समाधान हेतु समाज के प्रमुखों का संबोधन हुआ।
- जनजाति समाज के गौरवमय इतिहास को बताया।
- जनजाति प्रतिभाओं का सम्मान हुआ।
- 269 जिलों के 307 सम्मेलनों में 7 लाख से अधिक लोग सहभागी रहे।

अरुणाचल विकास परिषद की रजत जयंती

28 से 30 अप्रैल को अरुणाचल के इटानगर में अरुणाचल विकास परिषद का रजत जयंती सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में विकास परिषद के कार्य को बढाने में जिन कार्यकर्ताओं का प्रमुख योगदान रहा ऐसे जतन पुलो, नाबम आतुम, प्रतिक पोतुम, ताबा हारे, शान्ति तासो का मुख्यमंत्री पेमा खांडू जी ने सम्मान किया। उक्त अवसर पर मुख्यमंत्री जी ने विकास परिषद के कार्य की प्रशंसा की। अरुणाचल विकास परिषद ने सभी जिलों में रजत जयंती वर्ष उपलक्ष्य में सम्मेलनों का आयोजन किया था।

निर्मल वारी-त्र्यंबकेश्वर (निर्मल यात्रा)

महाराष्ट्र के त्र्यंबकेश्वर में माघ एकादशी निमित्त आयोजित यात्रा के समय वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं ने परिसर स्वच्छता हेतु 1200 शौचालयों की व्यवस्था की। एक हजार से अधिक कार्यकर्ताओं ने यात्रा परिसर स्वच्छ रखने हेतु सेवाकार्य में भाग लिया। वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगदेवराम जी ने यात्रा में जाकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन किया। समाचार विश्व से लेकर समाज के सभी वर्गों ने इस कार्य की प्रशंसा की।

जनजाति समस्याओं के सन्दर्भ में चर्चा

वनवासी कल्याण आश्रम महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं ने जनजाति समाज की समस्याएँ और उसके समाधान हेतु महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस जी के साथ चर्चा की। मुख्यमंत्री जी ने भी सभी प्रकार से सहयोग करने का आश्वासन दिया।

भारत-तिब्बत सीमा पर कन्या छात्रावास

उत्तराखण्ड के मुनशियारी स्थान पर अति पिछड़ी जनजाति वनराजी की बालिकाओं के लिये 2017 में छात्रावास का प्रारम्भ किया गया। भारत-तिब्बत सीमा से सटे क्षेत्र में चल रहे इस छात्रावास में अभी 14 बालिकाएँ अध्ययनरत हैं।

'महिला अध्ययन' हेतु 8000 परिवारों से सम्पर्क

देश के विभिन्न प्रांतों में महिला कार्यकर्त्ताओं द्वारा 'जनजाति महिलाओं की समस्याओं पर अध्ययन कार्य' किया गया। इस हेतु महिला कार्यकर्ता टोली बनाकर गांव-गांव में गई। यह अध्ययन पुणे की 'दृष्टि' संस्था द्वारा आयोजित किया गया था।

जनजाति आयोग का स्वागत एवं सम्मान

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा 31 मार्च 2017 को दिल्ली में नवगठित जनजाति आयोग के अध्यक्ष श्री नंदकुमार साय और अन्य सदस्यों का सम्मान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगदेवराम उराँव द्वारा किया गया।

रोहतासगढ़ यात्रा

10-11 फरवरी को रोहतासगढ़ यात्रा संपन्न हुई। राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय जगदेवराम जी एवं श्री गणेश राम भगत जी की उपस्थिति ने सबका उत्साहवर्धन किया। 275 युवाओं द्वारा संस्कृति रक्षा दौड़ एवं 370 महिलाओं की कलश यात्रा हुई। यात्रा में जनजाति समाज के पारम्परिक पुजारी बैगा, महतो, गौहा को सम्मानित कर देवी-देवताओं की पूजा हुई। इस कार्यक्रम में 16 हजार से अधिक लोग उपस्थित रहे।

संकुल ग्रामोदय-वनसब्जी महोत्सव

देश के सात राज्यों के 18 संकुलों में संकुल ग्रामोदय कार्य के अंतर्गत वनसब्जी महोत्सव का सफल आयोजन हुआ। ग्रामीण महिलाओं ने विभिन्न प्रकार की सब्जी एकत्रित कर उसको व्यंजनों के रूप में थाली में सजा कर प्रस्तुत किया। वन विभाग के अधिकारियों सहित उपस्थित सभी नगरजनों के लिए यह एक कौतुहलपूर्ण कार्यक्रम रहा।

पालघर में पेयजल योजना का लोकार्पण

महाराष्ट्र के पालघर जिले के मोकाशी पाडा ग्राम में कल्याण आश्रम के प्रयासों से पेयजल योजना का लोकार्पण 7 जनवरी को सम्पन्न हुआ। ग्रामविकास की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण कार्य हुआ।

जल संरक्षण - प. बंगाल में तालाब निर्माण

इस वर्ष समाज के सहयोग से 50 तालाबों का निर्माण हुआ है। अब तक कुल 490 तालाबों का निर्माण हो चुका।
यद्यपि हमारा कार्य तीव्र गति से बढ़ा है परन्तु हम अभी तक जितना चलें हैं उससे कई गुना चलना बाकी है। लक्ष्य बहुत दूर है। कार्य को और अधिक गतिमान करना होगा। इस ईश्वरीय कार्य में हमारा विश्वास है। विजय निश्चित है। ❑

हर्षोल्लास से मनी श्रीरामनवमी

श्रीराम शक्ति, शील और सौन्दर्य के आधार हैं। आचरण की शुचिता एवं त्याग की भावना से युक्त राम भारत की पहचान हैं। उनका चरित्र एक विस्तृत संगठन शास्त्र है और स्वयं श्रीराम एक परिपूर्ण आदर्श संगठक। श्रीराम एक आदर्श पुत्र, आदर्श मित्र, आदर्श भ्राता, आदर्श

पति, आदर्श राजा, आदर्श शत्रु के नाते प्रसिद्ध हैं। उनका छोटे से छोटा कार्य संगठन के सूत्रों की व्याख्यां है। छोटी-छोटी बातों में निरन्तर संगठन साधते रहने के फलस्वरूप ही उनके जीवन में अविश्वसनीय उपलब्धियाँ जुड़ी, उनका चरित्र शाश्वत प्रेरणा का अखण्ड स्रोत बना। स्वभाविक रूप से वनवासी सेवा कार्यों के सर्वकालीन आदर्श प्रभु श्रीराम ही हैं। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी कोलकाता-हावड़ा महानगर की समितियों ने 13 स्थानों पर उत्साहपूर्वक श्रीराम जन्मोत्सव का पालन किया। स्थानीय लोगों से सम्पर्क कर उन्हें कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया। समितियों ने अपनी-अपनी रुचि के अनुसार सुन्दरकाण्ड पाठ, श्री हनुमान चालीसा, भजन संध्या, राम के जीवन पर केन्द्रित लघु नाटिका एवं नृत्य आदि कार्यक्रम आयोजित किए जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। ❑

प्रभु श्रीराम का भक्ति-भावपूर्वक स्मरण

मेघालय के वनवासी क्रांतिवीर ऊ कियांग

ऊ कियांग का जन्म मेघालय के जोवाई कस्बे में हुआ था। उनकी माँ उन्हें अंग्रेजों के अत्याचारों के किस्से सुनाती थी। अत: छोटी उम्र से ही अंग्रेजों से संघर्ष की भावना उनमें घर कर गई थी। मेघालय में तब जयंतिया समुदाय काफी बड़ी संख्या में था। युवा होने पर ऊ कियांग ने जयंतिया नौजवानों में देशभक्ति की भावना भरनी शुरू कर दी। उन्हीं दिनों अंग्रेजों ने वनवासियों के घर-घर जाकर वसूली का काम प्रारंभ किया। जयंतिया समाज ने इसका कड़ा विरोध किया। एक बार पास के गाँव की महिला लाखी पिरदियांग के घर पर पुलिस वाले पहुँच गये। टैक्स देने से मना करने पर उन्होंने उसके घर में तोड़-फोड़ शुरू कर दी। क्रांतिकारी ऊ कियांग अपने साथियों के साथ उधर से निकल रहे थे। वे अंग्रेज हाकिमों की हरकत देख उन पर टूट पड़े। इस संघर्ष में उनके भी कई लोग मारे गये।17 जनवरी 1861 का वह दिन था। उसी दिन से ऊ कियांग का अंग्रेजों से सशस्त्र संघर्ष प्रारंभ हो गया। अंग्रेजों के खिलाफ आजादी का यह संघर्ष शीघ्र ही पूरे क्षेत्र में फैल गया। पाडू, सत्पटोर, जोवाई, नांगबाह, मिन्सू आदि बारह खण्डों में लोगों ने शस्त्र उठा लिए।अब अंग्रेजों ने कर वसूली के लिए अधिक कठोर उपाय अपनाने प्रारंभ किए, पर ऊ कियांग के कहने पर किसी ने यह कर अंग्रेजों को नहीं दिया। इस पर अंग्रेज उन भोले-भाले वनवासियों को जेलों में जबरन ठूसने लगे। ऊ कियांग और उनके साथी अंग्रेजों की पकड़ से बाहर रहे। वे घूम घूमकर देश के लिए मर मिटने वाले युवकों को संगठित कर रहे थे। धीरे-धीरे उनके पास भी अच्छा सैन्य बल हो गया। नांगबाह ने जनजातीय वीरों की सेना बनाकर अंग्रेजों से डटकर मुकाबला करने का निश्चय किया। कुछ समय बाद ऊ कियांग ने योजना बनाकर एक साथ सात स्थानों पर अंग्रेज टुकड़ियों पर हमला बोला। सभी जगह उन्हें अच्छी सफलता मिली। वनवासी वीरों के पास उनके परम्परागत शस्त्र ही थे जबकि अंग्रेजों के पास अत्याधुनिक हथियार थे। वे अंग्रेजों पर तेजी से अचानक हमला करते और फिर पर्वतों में जाकर छिप जाते। इस प्रकार लगातार अंग्रेजों से उनका युद्ध चलता रहा। अंग्रेज इन हमलों और पराजयों से बहुत परेशान हो गये थे। अंग्रेज किसी भी प्रकार से इस योद्धा को काबू करने का षड्यंत्र रचने लगे। आखिरकार एक देशद्रोही दलोई तिंगकान को पैसे का लालच देकर अंग्रेजों ने अपनी ओर मिला लिया। उधर लगातार युद्ध के कारण ऊ कियांग बुरी तरह से घायल हो गये थे।उनके साथियों ने इलाज के लिए उन्हें मिन्सू गाँव में छिपाकर रखा हुआ था। भेदिये ने यह सूचना अंग्रेजों को दे दी। फिर क्या था? अंग्रेज सैनिकों ने साइमन के नेतृत्व में गाँव को चारों ओर से घेर लिया। अत्यधिक घायल होने के कारण ऊ कियांग युद्ध करने के स्थिति में नहीं थे। फिर भी उन्होंने समर्पण नहीं किया और आखिरी समय तक युद्ध जारी रखा। आखिरकार अंग्रेजों ने घायल ऊ कियांग को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद अंग्रेजों ने उनके समक्ष प्रस्ताव रखा कि यदि अन्य सैनिक आत्मसमर्पण कर दें तो उन्हें छोड़ देंगे। वीर ऊ कियांग नांगबाह ने अंग्रेजों के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। अंग्रेजों ने तत्काल मुकदमा चला इस क्रांतिवीर को फांसी की सजा सुना दी। जीवाई में 30 दिसम्बर 1862 के दिन इस वनवासी वीर ऊ कियांग को मृत्युदंड दे दिया गया।

फांसी से पहले इस वीर क्रांतिकारी ने वहां उपस्थित जनसमूह से कहा, ''भाइयों-बहनों जब मेरी मृत्यु हो तो मेरे चेहरे को ध्यान से देखना! यदि मेरा चेहरा पूर्व दिशा की ओर हो तो समझना कि सौ साल में अंग्रेज सत्ता समाप्त हो जायेगी और यदि मेरा चेहरा पश्चिम की ओर हो तो समझना देश लम्बे समय तक गुलाम रहेगा।'' शहादत के बाद उनका चेहरा पूर्व की ओर ही था और उनकी भविष्यवाणी के अनुसार सौ साल से पहले ही भारत को स्वतंत्रता मिल गई थी। ❑

(पाथेय कण से साभार)

सुन्दरवन यात्रा के प्रेरक संस्मरण

एक सुखद अहसास

मैं कोटा में रहती हूँ। कोलकाता में मेरा मायका है। फरवरी में कोलकाता प्रवास के दौरान मेरे मामाजी श्री कमल जी पगारिया के साथ मेरा सुंदरवन जाने का कार्यक्रम बना। यद्यपि सभी लोगों से मैं अपरिचित थी लेकिन मामाजी के अनुरोध को हम टाल नहीं सके। हम लोग प्रात: ही बस व नौका के द्वारा सुन्दरवन पहुंचे। रास्ते में खाते-पीते, हँसते-हँसाते कहीं भी अपरिचय की स्थिति नहीं थी। वहाँ पर लोगों द्वारा जो आदर सत्कार मिला वह एक सुखद अहसास था। किस प्रकार नौका से दैनिक जीवन का संपूर्ण सामान ले जाते हैं, यह देखने को मिला।

वनवासी लोग किस प्रकार बीमारी में इलाज के बिना परेशान होते हैं और गरीबी के कारण कितना कष्टमय जीवन यापन करते हैं,यह सहज ही ज्ञात हुआ। कन्याओं के लिए छात्रावास का निर्माण भी एक श्रेष्ठ कार्य है। नारी के शिक्षित होने से ही पूरा परिवार शिक्षित हो सकता है। वहाँ के लोगों द्वारा खाने की सुंदर व्यवस्था में भारतीय संस्कृति का आतिथ्य देखने को मिला। सुखद अविस्मरणीय अनुभवों के साथ हम कोलकाता लौटे। ❑

– अंजना दूगड़

मुझे सात्विक आनन्द मिला

कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं ने यहां पहुंचकर उनकी जरूरतें महसूस की और बालिकाओं की शिक्षा एवं सुरक्षा हेतु छात्रावास के निर्माण का प्रण किया। उनकी चिकित्सा हेतु शिविर लगाकर दवाइयाँ वितरित की। इस कार्य में महिलाओं के साथ कई डॉक्टर भी जुड़े थे। मैं भी उनमें शामिल था। गोसाबा जाकर मुझे सात्विक आनन्द का अनुभव हुआ और प्रेरणा मिली। अब इस कार्य में क्रियाशील रहने का निश्चय किया है।

– राजाराम पहाड़िया

A DAY FULL OF ENRICHING EXPERIENCES

A medical dental camp was organised in Sunderban for school going girls of the village who lived in the hostel constructed by members of Kalyan Ashram. We had set up our equipments in four different rooms. One room was converted into a pharmacy from where medicine for all diseases were given free of cost. The other rooms included the general O PD equipped with pressure instruments and blood glucose testing machine, a room was for eye treatment & one also for oral health check-up. Patients were taught how to brush and were given toothpaste and brush too.

People were treated and given free medicines covering the entire duration prescribed by the doctor. It was a fulfilling experience. The most encouraging part of the journey was to see the elders with us working with commendable zeal and energy. They would tirelessly run around to take care of the proceedings & even take care of us juniors. It would have been impossible to do what we were doing if not for them. The journey to & from Sunderban was seamless; the comfort of each & every one of us was taken care of. It was a very well organised & well thought out activity. The harmony in the entire process & in its execution was really impressive. And last but not the least, the fact that so many had taken time off from their busy schedule, to make this happen spoke a lot about the intentions of everyone who participated.

I wish I get more such chances & opportunities to help our Vanvasi brethren in need.

-Dr. Aakansha
-Dr. Vandana Maroo
- Abhilasha Kulshretha

धूमधाम से मना कोलकाता हावड़ा महानगर का 39वां वार्षिकोत्सव

– इन्दू नाथानी, महानगर महिला संगठन मंत्री

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी पूर्वांचल कल्याण आश्रम का वार्षिकोत्सव दिनांक 17 दिसम्बर 2017 को सम्पन्न हुआ। मुख्य वक्ता के रूप में कार्यक्रम को शोभामण्डित कर रहे थे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह-सम्पर्क प्रमुख श्री अरुण कुमार। अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि हजारों वर्ष पूर्व अपना समाज एकरस था। बीच में कुछ वर्ष ऐसे गये जिसमें इस समाज को तोड़ने के प्रयास हुए। आज वनवासी कल्याण आश्रम वनवासी एवं नगरवासी को जोड़कर समरसता स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

इस अवसर पर कल्याण भारती त्रैमासिक पत्रिका की संपादन सहयोगी श्रीमती तारा माहेश्वरी ने पत्रिका के **जनजातीय पर्व एवं त्यौहार** विशेषांक का लोकार्पण माननीय अरूण कुमारजी के कर कमलों से करवाया। वनवासी युवती **'ठमा'** के जीवन पर आधारित नाटिका इस कार्यक्रम का आकर्षण रही। कैसे वनवासी कल्याण आश्रम के सम्पर्क में आकर ठमा गढ़ी गयी और ठमा के व्यक्तित्व का इतना विकास हुआ कि वो ठमा ताई के रूप में जानी जाने लगी एवं अपने कार्य कौशल एवं बुद्धिमत्ता के कारण वर्तमान में महाराष्ट्र सरकार की कला संस्कृति विभाग की प्रतिनिधि हैं। ठमा ने कल्याण आश्रम में रहते हुए जनजाति समाज की बहुत सी समस्याओं का निदान किया। महाराष्ट्र के वनवासी कल्याण आश्रम के जाम्भीवली केन्द्र से उन्होंने अपनी कार्य-यात्रा शुरू की थी। डॉ. कुंते एवं उनकी सहधर्मिणी शकुन्तला काकी जो जाम्भीवली केन्द्र के प्रभारी थे, उनका बहुत प्रभाव ठमा ताई के जीवन पर पड़ा। ठमा ताई ने शकुन्तला ताई से बहुत कुछ सीखा। आज ठमा ताई ने कार्य के माध्यम से 350 गाँवों में सम्पर्क साध लिया है। इन गाँवों में प्राय: सभी ठमा ताई के काम से उनको जानते हैं। जिस तरह ठमा ताई दिखने में साधारण व्यक्तित्व की किन्तु अद्भुत क्षमता वाली है, ठीक वैसे ही ठमा नाटक सुनने में साधारण किन्तु मंचन द्वारा इस नाटक ने अद्भुत प्रभाव समाज पर छोड़ा है। विशेष बात इस नाटक की यह है कि इस नाटक की लेखिका, निर्देशिका, संयोजक, कलाकार सभी कल्याण आश्रम परिवार के ही लोग हैं। बहुत कम समय में ठमा ताई के जीवन की झलकियों को दिखाना अपने आप में चुनौती थी। समाज को पसन्द भी आये और सही दिशा भी मिले, इस दृष्टि से **'ठमा'** नाटक सफल रहा। चुनौतियों को स्वीकार करते हुए सभी कलाकारों, लेखिका, निर्देशिका और संयोजकों ने कड़ी मेहनत की तभी इतना बड़ा कार्यक्रम सफल हो सका। इस नाटक में छोटी ठमा, और उसके परिवार के माध्यम से वनवासी समाज की आर्थिक, सामाजिक मजबूरी को दर्शाया गया। जीविकोपार्जन के लिए वनवासी समाज दूर दराज भट्टे पर जाकर जीने को मजबूर होता है एवं महिलाएं शोषित। स्वयं ठमा ताई निरक्षर होने के करण बार-बार अपमानित हुई। शकुन्तला काकी ने ठमा ताई को वनवासी कल्याण आश्रम के सहयोग से खड़ा किया। शनै: शनै: ठमा ताई ने पापड़ उद्योग की स्थापना की, खुद शिक्षा ग्रहण की। प्रौढ़ शिक्षा के लिए स्वयं से प्रयास किया। जनजाति के लिए पक्के घरों के लिए आन्दोलन तक कर दिया। पीने के पानी के लिए ट्यूबवेल की व्यवस्था की। ठमा ताई आज भी इस पवित्र कार्य से जुड़ी हुई कर्म पथ पर अग्रसर है। नाटिका का लेखन इन्दू नाथानी और निशा अग्रवाल ने किया तथा 'ठमा' के रूप में मुख्य भूमिका सुधा गोयल ने की। नाटक का सफल निर्देशन किया श्रीमती शुभ्रा अग्रवाल ने। सभी कलाकारों ने अपने उत्कृष्ट अभिनय से दर्शकों के दिल पर गहरी छाप छोड़ी। ❑

जन जागरण का प्रेरक अभियान : मकर संक्रान्ति

– शशि अग्रवाल, महानगर महिला सह-मंत्री

व्यक्ति और परिवार को अपने कर्त्तव्यों का स्मरण करवाने के लिए पर्वों का आयोजन किया जाता है। पर्व सामाजिक प्रगति एवं सुख-शन्ति की आचार संहिता है। पूर्वांचल कल्याण आश्रम के लिए मकर संक्रान्ति पर्व की सामाजिक समरसता के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण भूमिका है। समृद्ध समाज आर्थिक रूप से कमजोर समाज के लिए जीवनोपयोगी वस्तुओं का दान करे- ऐसी हमारी धार्मिक मान्यता है। कल्याण आश्रम ने धार्मिक परम्परा को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया और मकर संक्रान्ति को एक अभियान या आंदोलन के रूप में चलाया।

मकर संक्रान्ति के दिन स्थान-स्थान पर कैम्प या शिविर लगाए जाते हैं। इस दिशा में कार्य और प्रयास संक्रान्ति से एक महीने पहले ही शुरू हो जाता है। कार्यकर्ता घर-घर सम्पर्क करते हैं और कल्याण आश्रम के कार्य का उद्देश्य और उपयोगिता जन-जन तक पहुँचाते हैं। वस्तुत: संक्रान्ति अभियान जन सम्पर्क और संगठन का एक सशक्त माध्यम है। हमारा यह प्रयास रहता है कि इन शिविरों के माध्यम से महानगर के प्रत्येक क्षेत्र और कॉम्पलेक्स तक हम अपनी पहुँच बनाएं। पूरे कोलकाता-हावड़ा महानगर में इस वर्ष 104 कैम्प लगे। गत वर्ष यह संख्या 94 थी। इन 104 कैम्पों में लगभग 800 कार्यकर्ता और सहयोगी बंधुओं ने अपनी सेवाएं दी। 6500 से अधिक लोगों ने धनराशि या वस्तुदान देकर सहयोग किया। बहुत से ऐसे भी बंधु है जो कल्याण आश्रम से प्रत्यक्ष रूप से नहीं जुड़े हैं मगर मकर संक्रान्ति के कैम्प में स्वयं आगे बढ़कर और दायित्व लेकर कार्य करते हैं। कॉम्प्लेक्स में कैम्प लगाना इन्हीं बंधुओं के कारण संभव हो पाता है। इसी सहयोग के कारण इस बार 10 नए स्थानों पर कैम्प लगे।

वर्षों की इस साधना का परिणाम है कि संक्रान्ति के महीने भर पहले से ही कई सहयोगी बंधु पूछने लगते हैं कि इस वर्ष वनवासी बंधुओं की क्या विशेष आवश्यकता है और वे उनकी आवश्यकता के अनुरूप ही वस्तुएं मंगाकर देते हैं। इस बार हमारे छात्रावासों में बैठने के लिए दरी की विशेष आवश्यकता थी, तो अवनी समिति और लेकटाऊन समिति के सहयोगकर्ताओं ने बड़ी संख्या में बच्चों के लिए दरियाँ एकत्रित की। बांगुर समिति के कैम्प में एक विशिष्ट और आनन्ददायक अनुभव हुआ। एक सज्जन कैंप पर आए और 1100/- की धनराशि दी। हमारी कार्यकर्ता श्रीमती इन्दु पारीख ने उस सज्जन से कहा कि भैया कुछ और सहयोग करें, यह तो वनवासी बंधुओं के हितार्थ कार्य हो रहा है, सज्जन ने तत्काल 2100/- रुपये निकाले। उनकी सदाशयता से प्रभावित होकर इन्दुजी के मुख से सहज ही निकल गया ''भैया जब आप इतने मन से दे रहे हैं तो क्यों न वनवासी छात्र की शिक्षा का दायित्व जो मात्र 7500/- है, वहन करें?'' सुनते ही उस सज्जन ने बड़े हर्षपूर्वक 7500/- की रसीद कटवा ली। यह है कल्याण आश्रम के कार्य के प्रति लोगों का विश्वास।

इसी प्रकार लेकटाऊन के हनुमान मन्दिर के सामने कैम्प में एक बहन 500/- की राशि दे रही थी। हमारी वरिष्ठ कार्यकर्ता श्रीमती उमा सुराना ने कहा कि हम अपने बच्चों की परवरिश पर बेहिसाब खर्च करते हैं, यदि हम वनों में रहने वाले वनवासी छात्र का एक साल का दायित्व ले लें तो एक बच्चे को शिक्षित करने का सौभाग्य प्राप्त कर लेगें। उस महिला ने तत्काल ही एक छात्र के दायित्व की स्वीकृति दे दी। कहना न होगा कि मकर संक्रान्ति शिविरों के माध्यम से कार्यकर्ताओं की निष्ठा और परिश्रम के बहुत ही सकारात्मक परिणाम आ रहे हैं। ❑

कल्याण आश्रम की नई कार्यकारिणी, जशपुर नगर

– कृपा प्रसाद सिंह, अ.भा. उपाध्यक्ष

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के केन्द्रीय कार्यकारी मण्डल व केन्द्रीय प्रतिनिधि मण्डल की बैठक 16 फरवरी से 23 फरवरी तक आश्रम के मुख्यालय, वनयोगी सभागार, जशपुर में सम्पन्न हुई। इसमें कुल 206 कार्यकर्ता देश के सभी प्रान्तों से उपस्थित थे। 16 फरवरी को बैठक की शुरूआत भगवान राम, भारतमाता व आश्रम के संस्थापक बालासाहब देशपाण्डे के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर व पुष्प अर्पित कर, श्री जगदेव राम उरांव, कृपा प्रसाद सिंह, श्रीमती निलिमा पट्टे, श्री चन्द्रकान्त देव व डॉ. प्रसन्न सप्रे (संस्थापक सदस्य) ने की। 17 फरवरी 2018 को आश्रम के केन्द्रीय कार्यकारी मण्डल की बैठक प्रारम्भ हुई, बैठक के प्रारम्भ में आश्रम के दिवंगत कार्यकर्ताओं को श्रद्धांजलि दी गई।

आश्रम के महामंत्री श्री चन्द्रकान्त दवे ने आगत सभी सदस्यों का स्वागत किया व सदन के समक्ष महामंत्री प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। आश्रम के संगठन मंत्री श्री सोमया जुलु व श्री अतुल जोग ने सितम्बर माह से फरवरी माह तक के सम्पन्न कार्यक्रमों की जानकारी कार्यकारी मण्डल को दी। कोषाध्यक्ष श्री अर्जुनदास खत्री ने वर्ष 17-18 का अंकेक्षित प्रपत्र व आगामी वर्ष 2018-19 का बजट प्रस्तुत किया। थोड़े आवश्यक सुझावों के साथ कार्यकारी मण्डल के सभी सदस्यों ने इसे पारित कर दिया।

18 फरवरी 2018 को आश्रम के प्रतिनिधि मण्डल की बैठक सम्पन्न हुई। पुराने कार्यकारी मण्डल का कार्यकाल पूरा होने से प्रतिनिधि मण्डल ने डॉ. प्रसन्न सप्रे, चुनाव अधिकारी के नेतृत्व में आगामी तीन वर्ष के लिये नवीन कार्यकारी मण्डल का चुनाव सम्पन्न करवाया। तद्नुसार श्री जगदेव राम उरांव अध्यक्ष, श्री कृपा प्रसाद सिंह व श्रीमती निलिमा पट्टे उपाध्यक्ष, श्री योगेश बापट महामंत्री, श्री विष्णुकान्त व श्री रामलाल सोनी को संयुक्त महामंत्री, श्री अर्जुनदास खत्री कोषाध्यक्ष, श्री अतुल जोग संगठन मंत्री, श्रीमती माधवी जोशी, श्री सोमयाजुलु, श्री बीरबल सिंह, श्री प्रकाश काले, श्री रामचन्द्र खराड़ी (राजस्थान), श्री ताजोम तासुंग (अरुणाचल) सदस्य निर्वाचित किये गये।

कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं के द्वारा देश के सभी जिलों के प्रखण्ड स्तर तक का कार्य व सभी 72 पिछड़ी जनजातियों (PTG) तक सेवा कार्य पहुंचाने की योजना को मूर्त्त रूप दिया गया। प्राप्त आकड़ों के अनुसार इस वर्ष 10,18,277 रोगियों की सेवा कार्यकर्ताओं ने की है। आश्रम में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या 1,28,117 है। आश्रम के द्वारा 2879 स्वयं सहायता समूह चलते हैं जिसके लाभान्वितों की संख्या 39,088 है तथा 86 कौशल विकास केन्द्र में 1649 युवतियां लाभ ले रहीं हैं। आश्रम द्वारा संचालित 55 कृषि विकास केन्द्रों में 1158 लोगों को लाभ हुआ है।

78 ग्राम विकास केन्द्रों में 7193 किसानों को लाभ पहुंचाया गया है। मधु उत्पादन द्वारा 121 परिवारों को लाभ मिला है। इस प्रकार देश के 14,166 स्थानों पर 20,026 सेवा के केन्द्र वनवासी क्षेत्रों में चल रहे हैं। 8 दिवसीय इस बैठक में वनवासी बन्धुओं के लिये जंगल कानून, वनवासी बन्धुओं के हितों की रक्षा के लिये अलग-अलग अधिकार कानूनों पर चर्चा हुई। आश्रम के पुराने छात्र व कार्यकर्ताओं को इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये अभी से सितम्बर माह के अन्त तक कार्य में लगाये जाने की योजना बनी है। मानव तस्करी, महिला सशक्तिकरण, वन अधिकार अधिनियम, शिक्षा व स्वास्थ्य के प्रकल्पों के विकास हेतु सितम्बर महीने तक लगभग 205 बैठकों, संगोष्ठी व अभ्यास वर्गों का आयोजन किया गया। ❑

सभ्य कौन ?

– अतुल जोग, अ.भा.संगठन मंत्री

नागालैण्ड के दक्षिणी भाग में पेरेन जिले में जेलियांगरोंग जनजाति के लोग रहते हैं। जेलियांगरोंग नाम में जेमे, लियांगमाई और रोंगमाई नामक तीन उप जनजातियाँ समाहित हैं। इस जनजाति के लोग नागालैण्ड के अलावा असम के डिमाहासो (एन सी हिल्स) जिले के हाफलोंग के आसपास और मणिपुर के सेनापति और तेमलोंग जिले में भी रहते हैं।पद्मश्री रानी गाईदिन्ल्यु इसी जनजाति की थी। उन्होंने 15 साल की आयु में ही स्वतंत्रता सेनानी हैपाउ जादोनांग के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष आरम्भ किया। 29 अगस्त 1931 को जादोनांग को फाँसी होने के पश्चात् गाईदिन्ल्यु ने नागा समाज के संघर्ष का नेतृत्व किया। किंतु मुट्ठी भर लोगों का यह संघर्ष ज्यादा दिन नहीं टिक पाया और गाईदिन्ल्यु को ब्रिटिश सरकार ने 1932 में पकड़कर जेल में बंद कर दिया। 1932 से 1947 तक उन्हें जेल में रखा गया। अंग्रजों ने उन्हें उत्तर पूर्वांचल का आतंकी (Terror of North East) कहा था। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1974 में अपने समाज को ईसाई धर्मान्तरण से बचाने के लिए पुरातन समय से चली आ रही अपनी जनजातीय सनातन परंपराओं पर आधारित जेलियांगरोंग हेराका पंथ प्रचलित करने के साथ ही जेलियांगरोंग हेराका एसोसिएशन की भी स्थापना की। इस पंथ को मानने वाले हेराका लोग सर्वशक्तिमान ईश्वर को तिंग्वांग कहते हैं। हर पूर्णिमा के दिन प्रात:काल सूर्योदय के समय अपने मंदिर में जाकर प्रार्थना और पूजा करते हैं। हेराका युवकों की टोली वर्ष में दो बार प्रीचिंग कार्यक्रम (धर्म प्रचार यात्रा) का आयोजन करती है। एक बार मुझे भी इस धर्म प्रचार यात्रा में शामिल होने का मौका मिला। यह यात्रा पैदल ही चलती है। एक गांव से दूसरे गांव पहाड़ों में पाँच, छ: घंटे चलकर पहुंचा जाता है। शाम के समय गांव के लोग एकत्रित होते हैं। हेराका धर्म के समूह गान से सभा आरम्भ होती है। टोली के प्रमुख कार्यकर्ता गांववालों को हेराका धर्म का महत्व समझाते हैं। साथ में गीत नृत्य के आयोजन भी होते हैं। कार्यक्रम बहुत प्रभावी रहता है। रात में उसी गांव में विश्राम के बाद सवेरे गांव के सभी परिवारों में कार्यकर्ता जाकर पूछताछ करते हैं। ऐसे ही एक कार्यक्रम में नागालैण्ड-मणिपुर के सीमावर्ती मगुलोंग गांव में एक परिवार में हम गए थे। वहाँ केवल एक बूढ़ी माँ थी। वह बीमार थी। उसे बुखार आया था। ऐसी यात्रा में कार्यकर्ता कुछ दवाईयाँ भी साथ में लेकर जाते हैं। क्योंकि ऐसे दूरदराज के पहाड़ी क्षेत्र में न डॉक्टर होते हैं और न ही दवाई की दूकान होती है। हमारी टीम में रांगदाव नाम का कार्यकर्ता था। उसने बूढ़ी माँ से पूछताछ कर उसे पैरासिटामोल टैबलेट का एक पत्ता (स्ट्रीप) दिया।

माँ ने कहा 'मुझे चार गोली पर्याप्त है, दस गोली की आवश्यकता नहीं हैं'। रांगदाव ने जवाब दिया, 'माँ रहने दीजिए बाद में काम आएगी'। माँ बोली, 'नहीं नहीं, बचेगी तो दूसरे के काम आयेगी'। ऐसा कहकर चार गोली रखकर बाकी गोलियां लौटा कर माँ फिर बोली, लेकिन मेरे पास आपको देने के लिए पैसे नहीं हैं।' रांगदाव ने कहा, 'माँ हमें पैसे नहीं आपका आशीर्वाद चाहिए।' माँ बोली, नहीं नहीं मैं मुफ्त में दवाई नहीं लूंगी। ऐसा कहकर वह घर में गई और अंदर से तीन अंडे लेकर आई और रांगदाव के हाथ में थमा दिए। उस अनपढ़ सभ्य महिला को देखकर मेरे मन में विचार आया कि यह घटना शहर में घटती तो क्या होता? दवाई नहीं चाहिए फिर भी ले लो और मुफ्त में मिलता है तो लूट लो। ऐसा पढ़ा-लिखा समाज है जिसे हम Civil Society कहते हैं। केवल शिक्षित होने से हम सभ्य नहीं बनते। मन में प्रश्न उभरा, सभ्य कौन ? ❑

शोक संवाद

सुश्री तापसी मैत्र का दु:खद निधन

सुश्री तापसी मैत्र अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम की छात्रावास प्रमुख ने 67 वर्ष की आयु में 19 मार्च 2018 की प्रात: 7 बजे रिम्स, राँची के ICCU के द्वार पर पहुँचते ही शरीर त्याग किया। सुश्री मैत्र को 18 मार्च की रात यानि 19 मार्च को अति प्रात: 2:30 बजे व 4:30 बजे हृदयाघात हुए। प्रात: उनके कमरे में जब महिला कार्यकर्ता सुश्री ललिता कुमारी व तुलसी महतो तथा श्री प्रणय दत्त ने प्रवेश किया तो तापसी जी अत्यंत कष्ट में थी। उन्हें तत्काल RIMS ले जाया गया और ICCU के द्वार पर पहुंचते-पहुँचते 7 बजे तीसरा हृदयाघात आया और वहीं उन्होंने अन्तिम सांस ली।

सुश्री तापसी मैत्र का जन्म 1950 में देवरिया जिले में हुआ था। उनके पिता डॉ. जगन्नाथ मैत्र वहाँ के डॉक्टर थे। M.A. अर्थशास्त्र की पढ़ाई तापसी जी ने B.Ed के साथ की थी और वे एक विद्यालय में शिक्षिका थीं।

1992 में वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा आयोजित वनयात्रा कार्यक्रम में सहभागी होने के पश्चात सुश्री तापसी मैत्र ने 1993 में राँची, लोहरदगा, गुमला व जशपुर के प्रकल्पों का भ्रमण किया और कल्याण आश्रम से जुड़ गयीं। विभिन्न दायित्वों का निर्वाह करते हुए सम्प्रति अखिल भारतीय महिला छात्रावास प्रमुख के नाते कार्य देख रही थीं।

19 मार्च को संध्या 5 बजे उनका दाह संस्कार मुक्तिधाम, हरमुघाट, राँची में सम्पन्न हुआ। उनके छोटे भाई प्रदीप मैत्र ने बड़े भाई प्रवाल मैत्र की उपस्थिति में मुखाग्नि दी। प्रदीपजी जिला मजिस्ट्रेट हैं और प्रवाल मैत्र पाञ्चजन्य के सम्पादक रह चुके हैं। इस अवसर पर अखिल भारतीय उपाध्यक्ष माननीय कृपा प्रसाद सिंह, प्रांत कार्यवाह श्री राकेशजी, श्री विवेक भसीन-संघचालक, दूसरे नगरसंघचालक श्री पवन मंत्री, श्री जेठा नाग, रणधीर वर्मा, श्री तुलसी प्रसाद गुप्ता, श्री सुनील कुमार सिंह, श्री ओमप्रकाश लाल, श्री सज्जन सरॉफ, श्री तुलसी महतो, श्रीराम प्रसाद व उषा जालान, बजरंग दल के श्री सुशील कुमार, NMO, वनबंधु परिषद व विकास भारती आदि संस्थाओं के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

संगठन से जुड़े सभी कार्यकर्ताओं के साथ उनके आत्मीय संबंध थे। उन्होंने सबको स्नेह, प्रेम, निजता और नजदीकी दी। कोलकाता हावड़ा महानगर के कार्यकर्ताओं ने उनकी स्मृति में दिनांक 21 मार्च को वरिष्ठ प्रचारक माननीय गजानन बापट एवं अखिल भारतीय सह महिला प्रमुख सुश्री वीणापाणि दास शर्मा की उपस्थिति में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। सभा में प्रांत एवं कोलकाता-हावड़ा महानगर की महिलाओं ने उनके चित्र के समक्ष पुष्प अर्पण कर श्रद्धांजलि निवेदित की। माननीय गजानन बापट ने उनके सहज, सरल एवं समर्पित व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। तपसी दी के साथ वन अध्ययन यात्रा में सहभागी रही श्रीमती शशि अग्रवाल ने उनके साथ वनअध्ययन यात्रा के अनुभवों को साझा किया। अंत में सुश्री वीणापाणि जी ने रूंधे गले से तपसी दी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने नि:स्वार्थ भाव से निष्काम सेवा का आदर्श हम सबके समक्ष रखा है। संगठन से जुड़ी पूर्णकालीन महिला कार्यकर्ताओं के स्वास्थ्य एवं मानसिक प्रसन्नता के लिए वे पूरे मन से चिंता करती थी। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति नहीं की जा सकती। उनकी पुण्य स्मृति को शत् शत् नमन। ❑

नव संवत्सर

– विष्णुदत्त भट्टेवाड़ा

संवत्सर काल गणना हेतु सम्पूर्ण विश्व की सर्वोत्तम प्रणाली है। संवत्सर विश्व का सबसे वैज्ञानिक वर्ष है, जहाँ सौर वर्ष एवं चन्द्र वर्ष के मध्य एक बहुत ही सुदृढ़ सामंजस्य स्थापित किया गया है। संवत्सर के माह चन्द्रमा पर आधारित होने के पश्चात् भी वर्ष सूर्य पर आधारित रहते हैं। संवत्सर, पृथ्वी की ऋतुओं पर सर्वाधिक प्रभाव डालने वाले दो महत्वपूर्ण खगोलीय पिण्डों सूर्य तथा चन्द्रमा की कलाओं को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिक रूप से खरी कालगणना है, जिसका प्रत्येक परिवर्तन खगोल पर आधारित परिवर्तन है।

संवत्सर में कुल बारह मास होते हैं, जिनके नाम क्रमश: चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मागशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन है। प्रत्येक माह में दो पक्ष-कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष होते हैं एवं प्रत्येक पक्ष में साधारणत: पन्द्रह दिन अथवा चौदह दिन अथवा कभी-कभी सोलह दिन भी होते हैं। यदि हम गंभीरता पूर्वक विचार करें तो इन समस्त महीनों के नाम उन नक्षत्रों पर रखे गए हैं जिन नक्षत्रों पर उस माह में चन्द्रमा पूर्णिमा के दिन विचरण करता है। यथा चित्रा नक्षत्र के आधार पर चैत्र, विशाखा से वैशाख, ज्येष्ठा से ज्येष्ठ, पूर्वाषाढ़ा से आषाढ़, श्रवण से श्रावण, पूर्वाभाद्रपद से भाद्रपद, अश्विनी से आश्विन, कृतिका से कार्तिक, मृगशिरा से मार्गशीर्ष, पुष्य से पौष, मंघा से माघ तथा पूर्वा फाल्गुनी से फाल्गुन। चैत्र शुक्ला प्रतिपदा (नव संवत्सर) ऐसे समय आती है, जब सम्पूर्ण भारत में न तो अधिक गर्मी होती है, न अधिक सर्दी ही। इसके अतिरिक्त इस दिन हमारे कृषकों के लिए भी नए उत्साह तथा उल्लास का वातावरण होता है क्योंकि नई फसल कट चुकी होती है। हमारा देश कृषि प्रधान देश है इसलिए नई फसल समस्त देशवासियों में नए उत्साह का का संचरण करती है। इस दृष्टि से भी नव वर्ष का आयोजन चैत्र शुक्ला प्रतिपदा पर करना अधिक वैज्ञानिक, राष्ट्रीय, व्यवहारिक एवं सामाजिकता का पुट लिए हुए है। संवत्सर के महत्व से तो सभी सुपरिचित हैं कि इसी दिन युगाब्द का प्रारंभ, नवरात्रि की स्थापना, संत झूलेलाल, महर्षि गौतम, डॉ. हेडगेवार के जन्मदिवस होने के साथ ही ब्रह्माजी जी द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति का प्रथम दिवस भी है। यह दिन आर्य समाज की स्थापना एवं प्रभु श्रीराम के राज्याभिषेक का दिन भी है। शकारि विक्रमादित्य का विजयोत्सव भी इसी दिन मनाया जाता है। मानव जीवन में चन्द्र तथा नक्षत्रों का प्रभाव भी बहुत अधिक पड़ता है, इसलिए जन्मदिन, विवाह की वर्षगांठ अथव अन्य पर्व संवत्सर की तिथियों के अनुसार ही मनाया जाना अधिक वैज्ञानिक है। हमारे यहां देवी-देवताओं के जन्मदिन व अन्य त्यौहार भी संवत्सर से मनाए जाने की सुदृढ़ परम्परा रही है। हमारे देश की जनता अतीत में अपने समस्त कार्य संवत्सर के आधार पर ही करती रही है, आज भी ग्रामीण अंचलों में बहुसंख्यक व्यक्ति विक्रम् संवत के आधार पर ही अपने कार्यों का संचालन करते हैं, परन्तु आधुनिकता की चाहत में हम लोग इसे भूलते जा रहे हैं। आज हम स्वयं को प्रगतिशील बनाने के चक्कर में पश्चिम की बाढ़ में बहते जा रहे हैं। पश्चिम के विज्ञान को जानना व समझना बुरा नहीं है, किन्तु हमारे पूर्वजों की जो महान थाती है इसे अक्षुण्ण बनाये रखना और इसका प्रचार -प्रसार और संवर्धन करना भी हमारा पुनीत कर्तव्य है। ❑

अमृत वचन

- हमेशा सितारों की ओर देखो न कि अपने पैरों की ओर। दूसरी बात कि कभी भी काम करना नहीं छोड़ो, कोई काम आपको जीने का एक मकसद देता है। बिना काम के जिंदगी खाली लगने लगती है।

  - स्टीफन विलियम हॉकिंग

- इच्छा का समुद्र प्यासा रहा है। उसकी मांगे जैसे-जैसे पूरी की जाती है वैसे-वैसे वह गर्जन करता है।

  -स्वामी विवेकानन्द

अनुकरणीय

- जोड़ामन्दिर महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सुलोचना गुप्ता वर्षों से कल्याण आश्रम के साथ सक्रिय रूप से जुड़ी है। सभी कार्यकर्ताओं को मातृवत स्नेह देना एवं कार्य हेतु प्रेरित करना उनका स्वभाव है। कुछ दिनों पूर्व उनके विवाह के 50 वर्ष पूर्ण हुए तो अपने नियमित अनुदान के अतिरिक्त उन्होंने 5100/- रुपये वनवासी सेवा एवं संगठन हेतु कल्याण आश्रम को प्रदान किए। हम सुलोचना जी के सुदीर्घ और मंगलमय दाम्पत्य की कामना करते हुए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।
- श्रीमती पदमा जैन वर्षों से एक वनवासी छात्र की शिक्षा हेतु कल्याण आश्रम को अपना अनुदान दे रही है। संगठन के सभी कार्यक्रमों में उपस्थित रहने का प्रयास रहता है। गत 6 फरवरी को अपनी ज्येष्ठ कन्या सोनम के विवाहोपलक्ष पर वनवासी बंधुओं का आत्मीय स्मरण करते हुए उसने 21000/- की राशि संगठन को प्रदान कर यह प्रमाणित किया कि सामाजिक समरसता सिर्फ विचार नहीं आचरण की वस्तु है।
- वसुधा फाउण्डेशन की ओर से तेलंगाना प्रांत में वनवासी कल्याण परिषद द्वारा संचालित कोमरम भीम छात्रावास को जल शुद्धिकरण यंत्र (वाटर प्यूरिफायर प्लांट) भेंट में मिला। हम वसुधा फाउण्डेशन को धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।
- मकर संक्रान्ति के अवसर पर राजस्थान के पिंडवाड़ा स्थित आदर्श विद्या मन्दिर में भामाशाहों द्वारा 1000 भैया एवं बहनों को टिफिन, वाटर बोतल, बैग एवं मिठाई वितरित की गई। सामग्री प्राप्त कर एक ओर विद्यार्थियों के चेहरे खिले तो दूसरी ओर सहयोगकर्ताओं को भी समाज बंधुओं के प्रति अपने दायित्व पालन का संतोष मिला।

प्रेरक प्रसंग

तुम्हारी महारानी तो सीता है

भगिनि निवेदिता सार्द्ध शताब्दी वर्ष

एक दिन भगिनि निवेदिता ने अपने विद्यालय में छात्राओं से प्रश्न किया कि भारत की रानी कौन है? छात्राओं ने उत्तर दिया, 'महारानी विक्टोरिया'। अंग्रेज शासित भारत में इंग्लैण्ड की महारानी को वे स्वाभाविक रूप से रानी समझती थीं। यह उत्तर सुनकर भगिनि को बड़ा दु:ख हुआ। दु:खी मन से उन्होंने छात्राओं से पूछा, 'क्या वास्तव में तुम नहीं जानती कि भारत की रानी कौन है?' सभी बालिकाओं ने अपने सिर हिला दिये। इसके बाद स्वयं उत्तर देते हुए भगिनि निवेदिता ने कहा,- *'याद रखो इग्लैण्ड की रानी विक्टोरिया कभी भी तुम्हारी रानी नहीं हो सकती। तुम्हारी रानी सीता है। सदा के लिए भारत की रानी सीता है।'* अपने कन्या विद्यालय में उन्होंने बालिकाओं को विशुद्ध भारतीयता के ही संस्कार दिये। माता सीता, द्रौपदी, महारानी लक्ष्मीबाई, चेन्नम्मा जैसी आदर्श महिलाओं के जीवन चरित्र उन कन्याओं को पढ़ाये जाते थे।

बुजुर्ग की सदाशयता

कोलकाता महानगर द्वारा आयोजित मकर संक्रान्ति कैम्प में एक फटी पुरानी धोती पहने बुजुर्ग कुछ पाने की लालसा से आ पहुँचा। मकर संक्रान्ति पर वस्तुएं बांटी जाती है तो शायद उसे भी कुछ जीवनोपयोगी सामग्री मिल जाएगी, इसी आशा से वह कैम्प में आया था। कार्यकर्ताओं ने उसे बहुत प्यार से समझाया कि कल्याण आश्रम के कैम्प में वस्तुएं वितरित नही, सुदूर वनों में रहने वाले वनवासियों के लिए संग्रहित की जाती है। बुजुर्ग के मन की सुप्त संवेदनशीलता जाग्रत हो गई और उसने अपनी जेब से कुछ पैसे निकालकर सेवापात्र में डाल दिए। सिक्के डालते समय उसके चेहरे की दैवीय आभा देखकर कार्यकर्ताओं की आँखे सजल हो उठी। ❑

बोधकथा

संघर्ष से निखरता है जीवन

एक बार एक अध्यापक कक्षा में विद्यार्थियों को तितली की इल्ली के बारे में पढ़ा रहे थे। उन्होंने उनसे कहा कि यह इल्ली दो घंटे बाद तितली में बदल जायेगी लेकिन इसके लिए इसे अपने खोल से बाहर आने में संघर्ष करना होगा। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि जब वह इल्ली बाहर निकलने की कोशिश करे तो कोई भी उस इल्ली की मदद न करे। यह कहकर वे कक्षा से बाहर चले गए।

सभी विद्यार्थियों ने उसे ध्यान से देखना शुरू कर दिया। दो घंटे बाद इल्ली ने बाहर निकलने की कोशिश शुरू कर दी। उसे इतना संघर्ष करते हुए देख एक छात्र को उस पर दया आ गई और उसने इल्ली की सहायता करनी शुरू कर दी। तभी अध्यापक कक्षा में आ गए और उसे रोक दिया। वे विद्यार्थियों को समझाने लगे कि यदि इल्ली ने बाहर आने में संघर्ष नहीं किया और बाहर आ गई तो यह मर जाएगी और इसके विपरीत यदि यह बिना सहायता के बाहर आई तो बच जाएगी। अपने खोल से बाहर आने के लिए तितली जो संघर्ष करती है, वह इसके पंखों को मजबूत करता है।

इसी प्रकार तुम्हें भी जीवन में संघर्ष करना चाहिए। संघर्ष ही जीवन में सफलता की कुंजी है। संघर्ष व्यक्ति के जीवन के व्यक्तित्व को निखार कर उसे मजबूत बनाता है। जिस प्रकार सोना अग्नि में तपकर कुंदन बनता है उसी प्रकार मानव जीवन कठिनाइयों एवं चुनौतियों से जूझकर ही सार्थकता को प्राप्त करता है। ❑

कविता

विक्रम सम्वत् धन्य हमारा

सर्व जगत में सबसे न्यारा,
विक्रम सम्वत् धन्य हमारा।

शांति और सुख लाने वाला,
जीवन को हरषाने वाला,
शक्ति शौर्य बरसाने वाला,
प्राणों को हुलसाने वाला,
पावन जैसे गंगा-धारा,
विक्रम सम्वत् धन्य हमारा ।

यह भारत का स्वाभिमन है,
आर्य-शक्ति का यह प्रमाण है,
उल्लासों का साम गान है,
जीवन की स्वर्णिम उड़ान है,
प्राणों से है हमको प्यारा,
विक्रम सम्वत् धन्य हमारा ।

सकल दिशाएं हो मंगलमय,
अग्नि धरा जल नभ हों मधुमय,
रहे सदा यह जन गण निर्भय,
मिट जाएं सारे भ्रम-संशय,
टूटे मन के तम की कारा,
विक्रम सम्वत् धन्य हमारा ।

आओ ! हम सब मिल कर गाए,
गति के चरण न रुकने पाए,
नगपति अडिग न झुकने पाए,
प्राण-प्रदीप न बुझने पाए,
यही रहे संकल्प हमारा,
विक्रम सम्वत् धन्य हमारा।

– डॉ. अरुण प्रकाश अवस्थी

कल्याण आश्रम के सेवा-कार्य विस्तार एवं सुंदरबन में
निर्माणाधीन कन्या छात्रावास हेतु पुरुषोत्तम मास के पुनीत अवसर पर

श्रीराम कथा

एवं 108 मानस पाठ का भव्य आयोजन

कथाव्यास : **विदुषी कुमारी विजया उर्मलियाजी**

स्थान :
दी स्टेडल
साल्टलेक सिटी, साई स्पोटर्स कॉम्प्लेक्स
युवा भारती क्रीड़ांगण, कोलकाता - 700098
दिनाक: 19 मई से 27 मई तक
समय: दोपहर 2 से 6 बजे तक

सभी भक्तगण सादर आमंत्रित हैं।

आयोजक : **पूर्वांचल कल्याण आश्रम**

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram
161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com